बच्चों के पढ़ने–लिखने के विकास में पारिवारिक माहौल की भूमिका

गजेन्द्र राउत

यह लेख बच्चों की परवरिश के बारे में है। बच्चे पाठशाला में सीखते ही हैं, पर घर भी सीखने की एक महत्त्वपूर्ण जगह है। इस लेख में लेखक अपने बच्चे के साथ किए गए काम के उदाहरण प्रस्तुत करते हैं। ये उदाहरण दर्शाते हैं कि घर के आसपास के बारे में बच्चों से बातचीत करना, उनकी किताबों और पढ़ने–लिखने को लेकर उनसे बात करना, उनके साथ पढ़ना, यह सब पढ़ने–लिखने की आदत विकसित करने में मददगार होता है। वे हिन्दी, अँग्रेज़ी और मराठी में बच्चों के लिए लिखी गई कई किताबों का ज़िक्र भी करते हैं और यह भी बताते हैं कि इन किताबों का इस्तेमाल उन्होंने अपने बच्चे के साथ कैसे किया। –सं.

पृष्ठभूमि

प्रस्तुत लेख में, मैं एक अभिभावक के नाते अपने उन अनुभवों को आपसे साझा कर रहा हूँ जिनके चलते मेरा पुत्र आरव आज किसी भी टेक्स्ट को समझते हुए सहजता के साथ पढ़ सकता है और सृजनात्मकता के साथ लिखते हुए अपनी बात को अभिव्यक्त कर सकता है। मैं यहाँ बच्चे के भाषा विकास क्रम और परिवार में मिलने वाले माहौल व सहयोग के प्रभावों पर अपनी बात रखूँगा। मुझे आशा है कि मेरे इन व्यक्तिगत अनुभवों से पारिवारिक माहौल और अभिभावकों के स्तर पर किए जाने वाले प्रयासों की बच्चों के पढ़ने–लिखने के विकास में भूमिका पर कुछ रोशनी डाल सकूँगा और इनके वृहद शैक्षिक निहितार्थों को उकेर सकूँगा।

आरव का जन्म जुलाई 2010 में हुआ। शुरुआती 2 वर्षों तक हम मुंबई के बोरीवली इलाक़े में संजय गाँधी नेशनल पार्क के समीप स्थित अपने चचेरे भाई के घर पर ही रहा करते थे। नेशनल पार्क के जंगल में वन्य जीवन काफ़ी समृद्ध था। घर के पास अनेकों बन्दर इकट्ठा हो जाते थे। कुछ बन्दर अपनी माँ के साथ पेड़ पर चढ़ना–उतरना सीख रहे थे। आरव बहुत देर तक उन्हें देखता रहता। अब तक उसका टेक्स्ट से कोई वास्ता नहीं पड़ा था। हाँ, कुछ छोटी–छोटी कहानियाँ, जो मुझे शिक्षक प्रशिक्षण में इस्तेमाल करनी होती थीं, मैं ज़रूर उसे सुनाता था। उसे बड़ा आनन्द आता था सुनने में।

डोम्बिवली के एक साधारण सरकारी स्कूल के बाद माणगाव (ज़िला रायगढ़, महाराष्ट्र) में आरव का दाख़िला मराठी माध्यम स्कूल में करवाया। मेरा मानना था कि शुरुआती पढ़ाई अपनी मातृभाषा में ही हो तो अच्छा! पिछले कुछ वर्षों में मैंने समझा कि दुनिया का हर बच्चा, चाहे उसकी मातृभाषा कोई भी हो, भाषा का इस्तेमाल कुछ उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए करता है। एक बड़ा उद्देश्य तो अपने इर्द–गिर्द इस दुनिया को समझना ही है और इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए भाषा एक अद्भुत उपकरण के रूप में कार्य करती है। जब तक हम बच्चे के दृष्टिकोण से और बच्चे की ज़िन्दगी में भाषा की भूमिका को समझने में असमर्थ रहते हैं, तब तक हम माता–पिता, अध्यापक या शिक्षा

कार्यकर्ता के रूप में अपनी भूमिका ठीक से तय नहीं कर सकते।

मुझे लगता है कि भाषा को सिर्फ़ सम्प्रेषण का साधन मानकर हम उसका दायरा संकुचित कर देते हैं। शिक्षाविद् कृष्ण कुमार कहते हैं, "हममें से कई लोग भाषा को सम्प्रेषण का साधन मानने के इतने ज़्यादा आदी हो चुके है कि हम सोचने, महसूस करने और चीज़ों से जुड़ने के साधन के रूप में भाषा की उपयोगिता को अकसर भूल जाते हैं"। भाषा के उपयोग का यह व्यापक दायरा उन लोगों के लिए बेहद महत्त्वपूर्ण है जो छोटे बच्चों के साथ काम करना चाहते हैं। शिशु के व्यक्तित्व और उसकी क्षमताओं के विकास को आकार देने में भाषा एक विशेष भूमिका निभाती है। एक सूक्ष्म किन्तु मज़बूत ताक़त की तरह भाषा संसार के प्रत्येक बच्चे के दृष्टिकोण, उसकी रुचियों, क्षमताओं, यहाँ तक कि मूल्यों और मनोवृत्तियों को भी आकार देती है।" (कुमार : 1986, पृ. 1)

मैं भी जो कर रहा था वह इस नज़रिए के द्वारा ही निर्देशित हो रहा था।

किताबों की संगत

2013 में पहली बार मैंने आरव के लिए किताबों का एक सेट ख़रीदा। तब वह 3 साल का हुआ था। तूलिका पब्लिशर्स द्वारा प्रकाशित इन किताबों में से कुछ किताबों के नाम मुझे अभी भी याद हैं, जैसे– *हैलो!, व्हेअर इज़ थांगी, 9 टू 1, फ़्लॉवर,* आदि। इन सभी किताबों में सुन्दर चित्र भी थे और करने के लिए गतिविधियाँ भी। इन सभी किताबों के आख़िरी पन्ने पर लिखा होता, "आय कैन रीड दिस बुक"। जब आरव पूरी किताब पढ़ लेता तो उसे अहसास होता कि उसने एक किताब पूरी कर दी। यहाँ मेरा पढ़ने से मतलब सिर्फ़ टेक्स्ट तक सीमित नहीं था। मैं मानता था कि चित्र देखना भी एक तरह का पढ़ना ही होता है। मैंने और भी कई सारी किताबें ख़रीदीं, कुछ में सिर्फ़ चित्र थे, कुछ में चित्र और टेक्स्ट, कुछ में सिर्फ़ टेक्स्ट ही था और कुछ द्विभाषी पुस्तकें थीं। मैं चाहता था कि वो अलग-अलग किताबों को देखे, उलट-पलटकर छुए, मुझे देखे कि कैसे मैं लिपिबद्ध शब्दों को देख-देखकर उच्चारित कर रहा था ताकि वह उच्चारित ध्वनि और लिपिबद्ध शब्दों के बीच सम्बन्ध का अवलोकन कर पाए। हमारे घर में कोई अलमारी नहीं थी जिसकी वजह से किताबें इधर-उधर पड़ी रहती थीं। इसका फ़ायदा यह हुआ कि कई बार आरव की नज़र उनपर पड़ती और वह किताब हाथ में लेकर देखता, चित्रों का आनन्द उठाता, कभी-कभार पन्ने भी फाड़ देता। मेरी कोशिश यही रहती कि किताबें हरदम उसकी पहुँच में रहें।

अपने प्रोफ़ेशनल जीवन में आए दिन किताबों के महत्त्व के बारे में शिक्षकों से बातचीत होती थी। प्रशिक्षणों में भी मुख्य एजेंडा यही रहता था कि कैसे किताबें बच्चों के सामाजिक और संज्ञानात्मक विकास में मदद करती हैं। रुडाइन सिम्स बिशप (1990) कहती हैं, "किताबें 'खिड़कियाँ, दर्पण और स्लाइडिंग ग्लास डोर की तरह होती हैं।' दर्पण की तरह वह जो हम देखते हैं उसे प्रतिबिम्बित करने और जिस दुनिया में हम रहते हैं उसे जानने में मदद करती हैं। अपने जैसे किसी व्यक्ति के बारे में कहानी पढ़ना या सुनना अपने-आप में रोमांचकारी होता है। एक खिड़की की तरह किताबें हमें उन जीवनों को देखने और समझने की भी अनुमति देती हैं जो हमारे अपने से भिन्न हैं। स्लाइडिंग ग्लास डोर से तात्पर्य है, कैसे कोई पाठक किसी कहानी में आ और जा सकते हैं। लेखक द्वारा बनाई गई दुनिया का हिस्सा बन सकते हैं दूसरे के अनुभव में पूरी तरह से डूब जाते हैं।

मुझे हर बार लगता है कि अगर आप ख़ुद किसी बात से आश्वस्त हैं तो दूसरों को भी उसके बारे में आश्वस्त कर सकते हैं। कई बार प्रशिक्षण में जाने से पहले मैं आरव को कहानी सुनाया करता था और इससे मेरे दोनों काम हो रहे थे। एक तो शिक्षक प्रशिक्षण के लिए तैयारी और दूसरा आरव के साथ सार्थक समय

बिताना। इस तरह आरव ने कई कहानियाँ और कविताएँ सुनीं।[1] कुछ का ज़िक्र मैं ख़ासतौर पर यहाँ करना चाहूँगा– 'गिजुभाई का गुलदस्ता' भाग 1 से 10 तक, जिसमें से मुझे एक कहानी अभी भी याद है 'गंगाराम और मंगाराम', इस कहानी में एक ख़ास आकर्षण था, जो किसी को भी पसन्द आ जाए।

इन कहानियों और कविताओं को सुनने का असर यह हुआ कि आरव की सुनने की क्षमता बढ़ने लगी। वह कहानी के पात्रों के बारे में, किसी कहानी में आगे क्या होगा, आदि पर भी बात करने लगा। ख़ुद कहानी बनाने लगा, उसके पास समृद्ध शब्द संग्रह बढ़ता गया। कहानी ने उसके सोचने का दायरा बढ़ाया। मैंने उसे अलग-अलग शब्द देकर उनसे कहानी बनाने के लिए प्रेरित किया। एक बार मैंने उसे 'राजा', 'राक्षस', 'सेना', 'घोड़ा', 'मगरमच्छ', 'भाला', 'झण्डा', 'लड़ाई', 'लोग', 'हाथी' आदि शब्दों का उपयोग करके एक कहानी लिखने के लिए कहा। उसने अपनी कल्पना के बल पर नोटबुक के क़रीब 30 पृष्ठ लिखे। ये पृष्ठ अचानक नहीं लिखे गए क्योंकि कई बार बीच-बीच में उसने कहानी को लिखना छोड़ दिया था। कुछ बार यह अन्तराल एक-दो महीनों का भी रहा। लेकिन वह लिखता रहा और इसी लिखने के सफ़र में एक साल कैसे निकल गया, पता ही नहीं चला। ऐसा करते-करते आख़िरकार उस कहानी को आरव ने अन्तिम मुक़ाम तक पहुँचा ही दिया। इस कहानी के चित्र भी उसने बनाए।

"राजा सुदीर जादुई जाल का पता चलने से बहुत ख़ुश हुए क्योंकि यही एक चीज़ थी जो महल तक जाने से उसे रोक रही थी, पर उस ख़ुशी में भी एक दुःख था, उनको बस जादुई जाल कहाँ पर था यही पता था, पर ये नहीं पता था कि वो जाल कितने ख़तरनाक थे। जब राजा सुदीर ने महल के नक़्शे को पहली बार देखा तो उसे झटका-सा लगा, क्योंकि वह जादुई जाल एक नहीं था, दो नहीं थे, बल्कि कदम-कदम पर एक जादुई जाल था"

(आरव द्वारा लिखित राजा सुदीर की साहस कथा का एक अंश)



1. इनमें से मुझे अभी भी कुछ याद हैं, जैसे- 'क्यों जी बेटा रामसहाय', 'मैं भी', 'बिल्ली के बच्चे', 'रूसी और पूसी', 'चिकनिक चूँ', 'भेड़िए को दुष्ट क्यों कहते हैं ?', 'पहला घर', 'मन के लड्डू', 'ओ हरियल पेड़', 'झींगुर गा ना पाए', 'अक्ल बड़ी या भैंस', 'बम्बू टस से मस न होने वाला गधा', 'महके सारी गली गली' (कविता संग्रह, एकलव्य प्रकाशन); 'The Red Umbrella - लाल छत्री', 'Purple Jojo - वांगी रंगाचा जोजो', 'Line and Circle - रेघ आणि वर्तुळ', 'Little Frog - छोटासा बेडूक', 'एक भील कथा', 'Jalebi Curls - जिलबीची वेटोळी', 'The Rooster and the Sun - कोम्बडा आणि सूर्य', 'Monday to Sunday - सोमवार ते रविवार', 'Upside down - उलटे सुलटे', 'Where is Amma', 'Dancing on the walls', 'Where is that cat', 'Rooster Raga', 'Mala's Silver Anklets' (तूलिका प्रकाशन); 'बाल रामकथा', 'बाल महाभारत कथा' (एनसीईआरटी); 'काश एक बेटा मेरा भी होता', 'जिष्णु की चतुराई' (कथा प्रकाशन); 'छोटा पक्षी', 'नीना आणि मांजर', 'इचा पूचा' (ज्योत्स्ना प्रकाशन); 'चार बहरे', 'चिड़ियाघर का नाई', 'नटखट जम्बो', 'महगिरि' (सीबीटी प्रकाशन); 'मुथुची मनोराज्ये', 'बरसात कब होगी', 'मानुस आणि सावळी', 'शोर मचा जंगल में' (एनबीटी प्रकाशन); और ऐसी कई सारी किताबें।

आरव इस कहानी से सम्बन्धित अपने अनुभव में कहता है कि मेरे लिए एक ही सलाह सबसे काम की थी जो मेरे पापा ने दी थी। जब भी मैं बीच-बीच में लिखना रोक देता था तब मुझे हर बार कहा जाता था कि लिखते रहो, वह एक दिन ख़त्म ज़रूर होगी।

पढ़े हुए पर संवाद

कहानी सुनाने का मेरा उद्देश्य आरव का नैतिक विकास करना कभी नहीं रहा। मैं ख़ुद इन कहानियों में डुबकियाँ लगाता और आरव को भी प्रेरित करता कि वह भी कहानियों में मज़े से गोता लगाए और उसका लुत्फ़ उठाए। इन कहानियों पर हम सोते वक़्त बातचीत करते थे। अगर मैं घर पर नहीं होता तो उसकी मम्मी उसे कहानी सुनाती और बातचीत करती। बातचीत करना एक अमूल्य संसाधन है जिसकी लागत कुछ भी नहीं है, ख़ासकर पूर्व प्राथमिक और प्राथमिक स्कूल के बच्चों के साथ। इस दृष्टिकोण से मुझे प्रेरणा मिली कि मैं आरव के साथ ढेर सारे विषयों पर बात करूँ। हम किसी भी मुद्दे को लेकर बात करते थे, ख़ासकर उसके स्कूल में दिनभर क्या हुआ, उसने नया क्या सीखा, पूरे दिनभर कोई नया सवाल मन में आया क्या, कोई पुरानी बात नए तरीक़े से समझी क्या, सबसे बकवास बात क्या लगी और क्यों, आदि अनेक सवालों पर हम बात करते नहीं थकते। मैंने उसे व्यस्त रखने के लिए कोई चीज़ नहीं ख़रीदी, क्योंकि बातचीत जैसा मूल्यवान संसाधन मेरे पास पहले से ही मौजूद था।

सिर्फ़ किताबें होने से काम नहीं बनता, किताब पढ़ने के बाद उसपर बातचीत भी ज़रूरी है। कहानी के बाद चर्चा करना थोड़ा मुश्किल काम है। कहानी के नैतिक मूल्य, अगर उस कहानी में है भी, में बच्चों को कोई विशेष रुचि नहीं होती; उनके लिए तो बस कहानी ही महत्त्वपूर्ण है। अगर हम उनसे नैतिक मूल्य के बारे में पूछते हैं, तो हम अपने काम की उपलब्धि को ही कम कर देते हैं। दूसरा मुद्दा, ज़्यादातर शिक्षकों और अभिभावकों द्वारा इस बात पर ज़ोर देना है कि बच्चों को कहानी याद होनी चाहिए। कुछ पालक चाहते हैं कि जब घर में मेहमान आएँ तो बच्चे ज्यों-की-त्यों कहानी या कविता उन्हें सुनाएँ। बच्चे इस माँग से चिन्तित होते हैं और कहानियों का आनन्द लेना बन्द कर देते हैं क्योंकि वे उस माँग के बारे में चिन्तित महसूस करते हैं जिसे उन्हें बाद में पूरा करना होगा।

लिखित भाषा की चारों ओर उपस्थिति

मैंने घर में सारी दीवारों पर चार्ट लगा दिए थे। हिन्दी और अँग्रेज़ी वर्णमाला के चार्ट मैंने जानबूझकर नहीं लगाए थे। मेरा मानना था कि बच्चे भाषा को किसी सन्दर्भ में समझते हैं, ऐसे टुकड़े-टुकड़े करके भाषा सीखने में उन्हें आनन्द नहीं आता और फिर स्कूल में ये सब पढ़ाया जा ही रहा था। मैंने एकलव्य से प्रकाशित कुछ ऐसे चार्ट दीवार पर लगाए थे जिनमें टेक्स्ट और चित्र दोनों थे। मसलन, 'एक बुढ़िया', 'बादल', 'पापा की रोटी', 'दो पतंग', 'मैं भी', 'उड़न छू', 'पक पक', 'जामुन', 'Five Big Laddus', 'चींटी और जूँ'। अगर कोई बच्चा टेक्स्ट नहीं भी पढ़ पाता, तब भी वह इन चार्टों में दिए गए चित्रों को देखकर और अन्दाज़ा लगाकर कहानी बता सकता था। आते-जाते आरव की नज़र इन चार्टों पर पड़ती। मैं उसके साथ जब इन चार्टों से पढ़ता तो वह धीरे-धीरे ध्वनि और अक्षर में सम्बन्ध देखना शुरू कर रहा था। कुछ ऐसे भी चार्ट लगाए थे जो ख़ाली थे। उसे स्वतंत्रता थी कि वह इनपर कुछ भी बनाए, लाइनें खींचे, चित्र बनाए या घर की वस्तुओं के नाम लिखे। इनमें मुझे याद है वह पेन, बेड, गाड़ी, गाय, बकरी, शाळा जैसे शब्द लिखने लगा।

कृष्ण कुमार की बात मेरे ज़ेहन में गूँजती रहती थी कि, "...'पढ़ने का स्वस्थ कौशल' हम उन कौशलों के समूह को मानेंगे जो लिखी या छपी भाषा को अर्थ से जोड़ने में बच्चे की मदद करते हैं। जब तक एक बच्चा पढ़ी हुई सामग्री को समझने या पहले से ज्ञात किसी चीज़ से जोड़ने में असमर्थ रहता है तब तक हम उसकी पढ़ने की क्षमता को स्वस्थ नहीं कह सकते।

पढ़ने की परिभाषा हम 'लिखे हुए शब्दों में अर्थ ढूँढ़ने की प्रक्रिया' के रूप में करेंगे।"

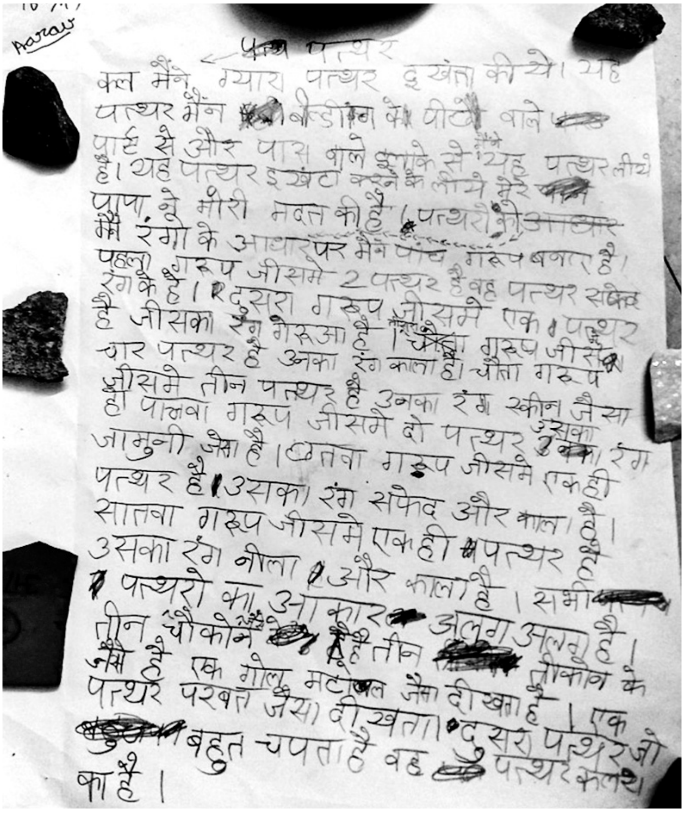
आरव की पढ़ने की शुरुआत टेक्स्ट से ही हुई। मैं चार्ट और कार्ड की उपयोगिता को पूरी तरह नकार नहीं रहा हूँ, लेकिन वे निरन्तर टेक्स्ट व किताबें पढ़ने के लिए प्रेरणा नहीं देते हैं। मैंने ढेर सारी हिन्दी, मराठी, अँग्रेज़ी की किताबें ख़रीदीं। इन किताबों की ख़ास बात यह थी कि वो छोटी साइज की थीं और उनमें ढेर सारे चित्र थे।

इन किताबों को पढ़कर सुनाने और इनपर बातचीत करने का एक फ़ायदा यह हुआ कि कुछ ही समय में आरव केवल चित्रों को देखकर ही कहानी का अनुमान लगा लेता। इसी अनुमान के सहारे वो आगे चलकर किताब को स्वयं पढ़ने लगा। *फु कू, जलेबी, गाय, खिलौने वाली, नाना-नानी, आई एक ख़बर, नया स्वेटर, भालू ने खेली फ़ुटबॉल, अशरफ़ का उड़न खटोला, छतरी, अट्टु गट्टू, तुमने मेरा अंडा तो नहीं देखा,* आदि ऐसी ही कुछ किताबों के नाम हैं। बाद में *साइकिल* और *प्लूटो* मैगज़ीन (इकतारा प्रकाशन) भी बहुत उपयोगी संसाधन साबित हुए।

2016 में हम महाराष्ट्र से दिल्ली आ गए। यहाँ आरव का दाख़िला कक्षा 1 के बजाय यूकेजी में करवाना पड़ा क्योंकि आरव मराठी स्कूल से आया था और यह स्कूल अर्द्ध-अँग्रेज़ी माध्यम का था। अधिकांश रूप से यहाँ पढ़ाई हिन्दी में ही होती थी। हिन्दी उसके लिए एकदम नई भाषा नहीं थी। चूँकि मराठी और हिन्दी की लिपि देवनागरी ही है, इसलिए उसे यह कठिन नहीं लगी। उसने पढ़ना और लिखना जल्दी ही सीख लिया।

लेखन को प्रोत्साहन

मैं लेखन को मौखिक भाषा के विस्तार के रूप में ही देखता हूँ। आरव को अब आत्मविश्वास था कि वह किसी के साथ भी बात करने में सक्षम है। यह आत्मविश्वास इतनी सारी कहानियाँ सुनने एवं उनपर बात करने से आया। अब इन्हीं बातों को वो लिखने लगा। जब मैं ऑफ़िस से लौटता तो एक बात ज़रूर करता कि आरव कम-से-कम दो-चार लाइनें रोज़ लिखे, लेकिन वो लाइनें उसके अपने मन की हों। लिखने की इस प्रक्रिया में उसे पता लगा कि लिखी हुई बातें हम कभी भी वापस देख सकते हैं। लिखने का यह सफ़र शब्दों और वस्तुओं के विवरण से आगे बढ़कर, किसी अनुभव को विस्तार से लिखने तक बढ़ा।

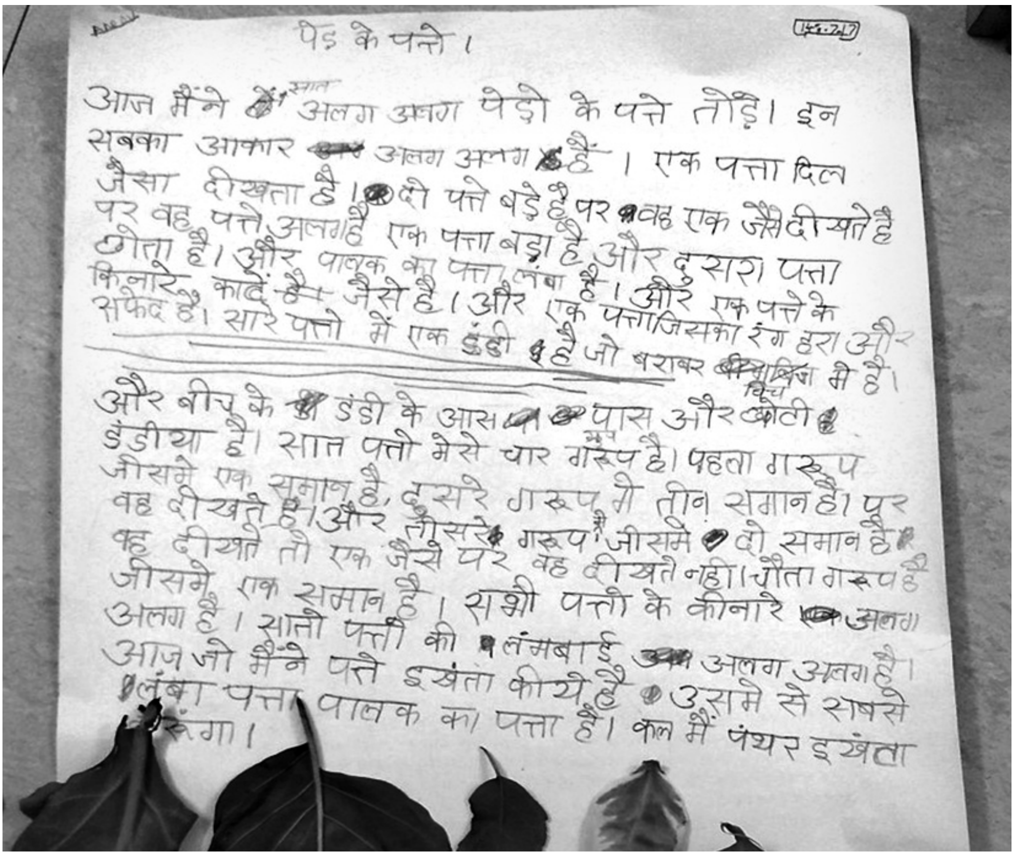


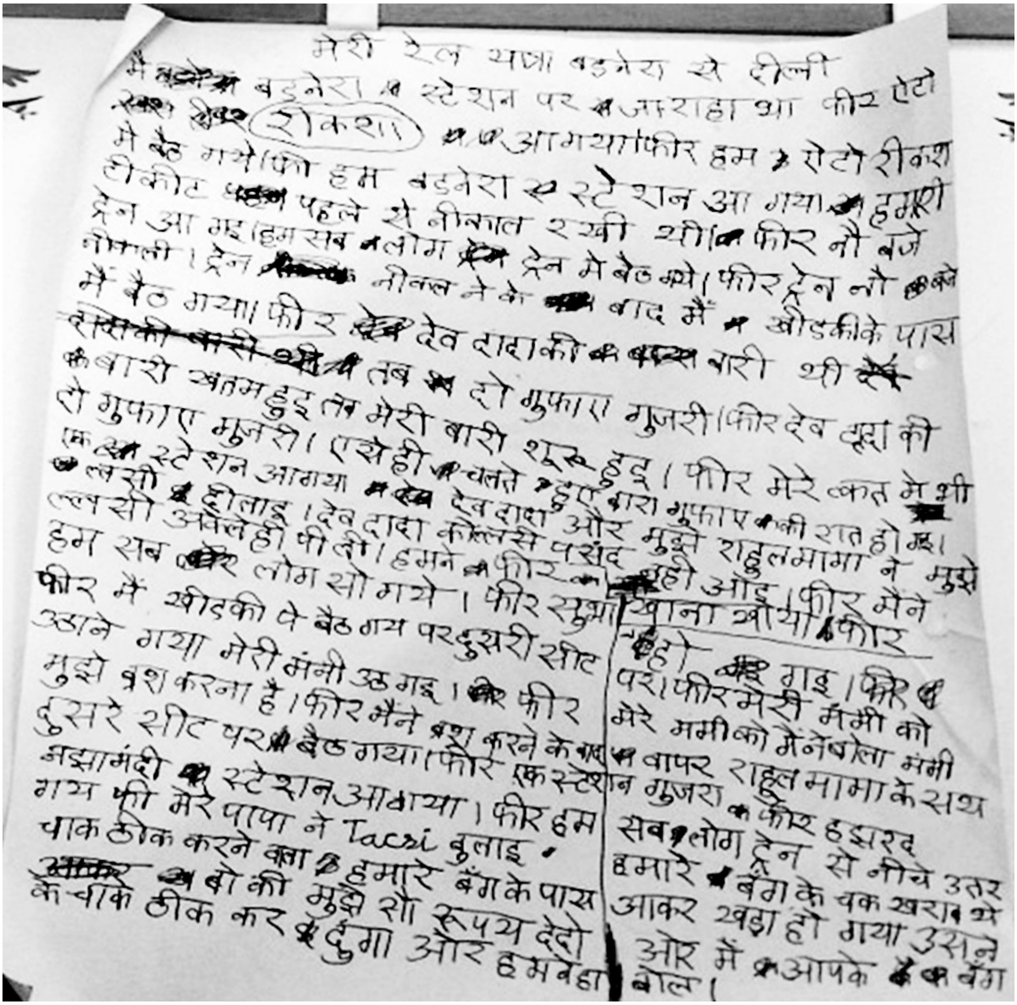
जब आरव ने लिखना शुरू किया तो मैं उसे कुछ लेखन बिन्दुओं को चिह्नित करने में मदद करता। उदाहरण के लिए, मैं उससे घर में दिख रही चीज़ों के बारे में पूछता और इनमें से उसे जो चीज़ पसन्द होती, उसपर लिखने को प्रेरित करता। साथ ही उसके द्वारा देखी गई जगहों के अनुभव लिखने को प्रेरित करता। इस प्रकार उसने यात्राओं के वर्णन लिखने शुरू किए। उसे इन सब अनुभवों पर लिखने में आनन्द आता। कभी-कभी एकत्रित पेड़ के पत्तों और पत्थरों के अवलोकनों, इनके पैटर्न आदि के बारे में भी उसने लिखा।

अब अनुभव के साथ-साथ उसका शब्द भण्डार भी बढ़ रहा था। कुछ विषयों पर तो वह थोड़ा-थोड़ा लिखते हुए एक-एक महीना लगा देता। समय-समय पर प्रोत्साहित करना इसमें बड़ी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

शुरुआती लेखन यात्रा में व्याकरण के प्रति रवैया

लिखने की इस यात्रा में मैंने और मेरी पत्नी ने व्याकरण के लिए आरव को आमतौर पर नहीं टोका। हम चाहते थे वो खुलकर लिखे। हमें लगता था कि व्याकरण आगे जाकर सीख ही लेगा। यही कारण था कि उसने जल्दी ही पढ़ना और लिखना सीख लिया। लेखन की यात्रा के दौरान वह किसी भी ग़लती पर कभी रुका नहीं, और हमने भी बहुत टोका नहीं। अगर उसके द्वारा लिखे गए विषयों को देखा जाए तो इनमें विविधता है। मसलन, शुरुआत में घर की वस्तुओं जैसे फ़ैन, एसी, आम, ग्लोब, पुस्तक, लैपटॉप, चुम्बक, फ़्रिज, कलम, कम्बल, मेरा पसन्दीदा फल, मेरा जन्मदिन, मेरा घर, पेड़ के पत्ते, आदि पर उसने लिखा। आगे चलकर उसने स्कूल में हुए अनुभवों, मसलन, स्कूल का पहला दिन,




मेरी रेल यात्रा बडनेरा से दीली
मै बडनेरा स्टेशन पर जारहा था फीर ऐटो
(रीकशा) आगया। फीर हम ऐटो रीकशा
मे बैठ गये। फीर हम बडनेरा स्टेशन आ गया। हमारी
टीकीट पहले से नीकाल रखी थी। फीर नौ बजे
ट्रेन आ गइ। हम सब लोग ट्रेन मे बैठ गये। फीर ट्रेन नौ बजे
नीकली। ट्रेन नीकल ने के बाद मैं खीडकी के पास
मैं बैठ गया। फीर देव दादा की बारी थी
बारी खतम हुइ तब दो गुफाए गुजरी। फीर देव दादा की
दो गुफाए गुजरी। एसे ही चलते हुए। फीर मेरे बारी शूरू हुइ। फीर मेरे क्लास मे भी
एक स्टेशन आगया देव दादा ने बारा गुफाए की रात हो गइ।
लसी ली। देव दादा और मुझे राहुलमामा ने मुझे
लसी अकेले ही पी ली। हमने फीर खाना खाया। फीर
हम सब लोग सो गये। फीर सुबह हो गइ। फीर मैंने
फीर मैं खीडकी पे बैठ गया पर दुसरी सीट पर। फीर मेरी मंमी को
उठाने गया मेरी मंमी उठ गइ। फीर मेरे मम्मी को मैंने बोला मंमी
मुझे ब्रश करना है। फीर मैंने ब्रश करने के बाद वापर राहुल मामा के सथ
दुसरे सीट पर बैठ गया। फीर एक स्टेशन गुजरा फीर हझरद
नझामंदी स्टेशन आगया। फीर हम सब लोग ट्रेन से नीचे उतर
गये फीर मेरे पापा ने Tacxi बुलाइ। हमारे बॅग के चक खराब थे
चाक ठीक करने वाला हमारे बॅग के पास आकर खडा हो गया उसने
बोकी मुझे सौ रूपय देदो और मैं आपके बॅग
के चाके ठीक कर दुंगा और हम बेहा बोल।

स्वतंत्रता दिवस, मेरी छुट्टी, साइंस म्यूज़ियम की यात्रा, फ़नी स्कूल, एयरपोर्ट म्यूज़ियम, जस्ट चिल वाटर एंड फ़न पार्क-दिल्ली, आदि पर लिखा। दूसरी कक्षा तक आते-आते वह अपने द्वारा की जाने वाली यात्राओं पर लिखने लगा। मसलन, मेरी ट्रेन की यात्रा बडनेरा से दिल्ली तक, दिल्ली का अक्षरधाम मन्दिर, शिमला की यात्रा, दिल्ली का चिड़ियाघर, चोखी ढाणी सोनीपत की कहानी, बाल भवन की यात्रा, आदि। इस प्रकार उसके लेखन का दायरा बढ़ता गया। मेरे एक साथी की मदद से हमने उसके लेखन को बिना किसी सम्पादन के ऑनलाइन प्रकाशित भी किया। इस प्रकाशन से आरव को और प्रोत्साहन मिला और फिर लिखने का सिलसिला आगे तक जारी रहा।

अच्छे स्कूल और मीडियम की भूमिका

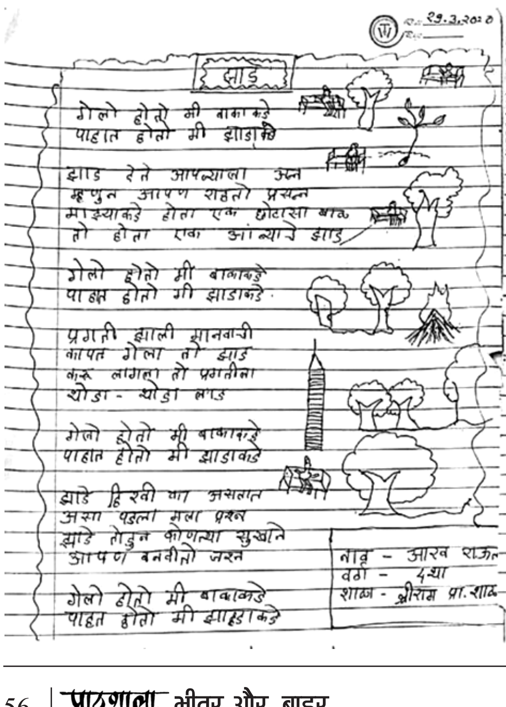
जून 2019 में निजी कारणों से हम दिल्ली से अपनी पैतृक जगह अमरावती लौट गए। अमरावती आते ही हमारे सामने आरव के लिए एक 'अच्छे स्कूल' का मुद्दा उठा। बच्चे का किस स्कूल में दाख़िला करवाना है यह निर्णय सिर्फ़ माँ-बाप ही नहीं लेते, बल्कि दादा-दादी, चाचा-चाची और अन्य परिवारजन की भी इसमें अहम भूमिका होती है। ग़ौरतलब है कि 'अच्छा स्कूल' को लेकर इन सब सदस्यों के

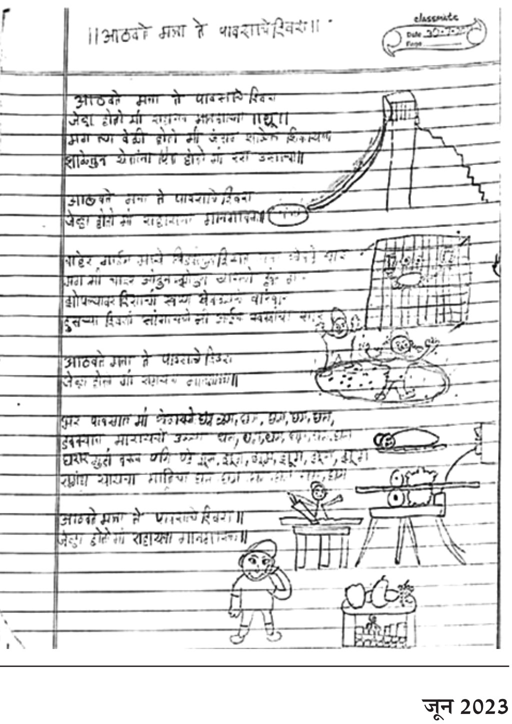
अपने-अपने मत होते हैं। हमारे साथ भी यही हुआ। दादी का कहना था, "पास वाले के बच्चे देखो, अँग्रेज़ी मीडियम स्कूल में जाते हैं जहाँ अच्छे घरों से बच्चे आते हैं। आज कल अँग्रेज़ी पढ़ना भी तो बहुत ज़रूरी है।" अमरावती में भी कई स्कूल हैं। ये स्कूल स्टेट बोर्ड, सीबीएसई, आईबी, आईसीएसई आदि से सम्बद्ध हैं। आरव की मम्मी का कहना था, "हमारा एक ही तो बच्चा है उसकी पढ़ाई के लिए भी क्या रुपए-पैसे का सोचोगे?" मेरा कहना था, "बात पैसे की नहीं है। लेकिन हमें सोचना चाहिए कि आरव का भला किसमें है, बड़े-बड़े स्कूलों में रहकर वह कहीं भीड़ में न खो जाए! मैं जानता हूँ म्युनिसिपल स्कूलों के हालात ठीक नहीं हैं, लेकिन मैं कुछ और स्कूलों को भी देख रहा हूँ।" मैं ऐसा स्कूल देख रहा था जो घर के नज़दीक हो ताकि आने-जाने का समय बचे, स्कूल के शिक्षक स्थाई हों, स्कूल बहुत बड़ा न हो, जहाँ शिक्षक एवं बच्चों का संवाद लगातार होता हो, स्पर्धा के बजाय सहयोग को महत्त्व दिया जाता हो, स्कूल को स्थाई रूप से सरकारी सहायता प्राप्त होती हो, आदि। ऐसा स्कूल मुझे मिला भी। आरव का दाख़िला हमने सरकारी वित्तीय सहायता प्राप्त 'श्रीराम प्राथमिक स्कूल' में करवाया। घर में दाख़िले को लेकर जो चर्चा होती थी आरव उसे सुनता था। इसका ज़िक्र उसके लेखन में भी दिखता है :

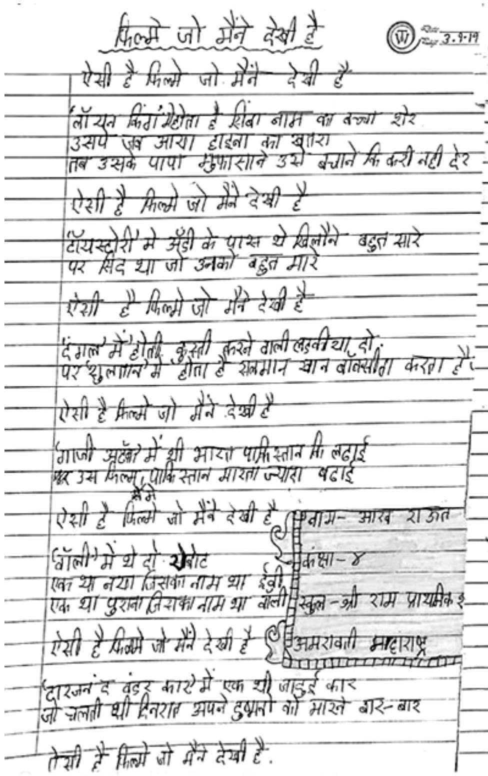
"मेरे पापा मुझे सिर्फ श्रीराम स्कूल में ही डालना चाहते थे, वो स्कूल एकदम सस्ती थी बाकि सारे स्कूल महंगे थे और वो पास भी थी।"– (आरव की डायरी-मेरी श्रीराम स्कूल में एडमिशन।)

स्कूल का जो वातावरण था उसका सीधा असर उसकी पढ़ाई-लिखाई पर हुआ। यहाँ वो मराठी सीखने लगा। इससे पहले आरव जो लिखता था, सब हिन्दी में था। उसकी हिन्दी भाषा पर पकड़ थी, इसलिए उसे मराठी लिखने में ज़्यादा कठिनाई नहीं हुई और देखते-ही-देखते उसने मराठी में भी नीचे लिखे कुछ विषयों पर अपने अनुभव लिखने शुरू कर दिए :

"शैक्षणिक सहल फन अण्ड फ़ूड नागपुर, आनद मेळावा माझे अनुभव, कोरोना एक संकट,







फिल्मे जो मैंने देखी है

3.9.19

ऐसी है फिल्मे जो मैंने देखी है

लॉयन किंग मे होता है सिंबा नाम का बच्चा शेर
उसपे जब आया हाइना का खतरा
तब उसके पापा मुफासाने उसे बचाने की करी नही देर

ऐसी है फिल्मे जो मैंने देखी है

टॉयस्टोरी मे अँडी के पास थे खिलौने बहुत सारे
पर सिद था जो उनको बहुत मारे

ऐसी है फिल्मे जो मैंने देखी है

दंगल में होती कुस्ती करने वाली लड़कीया दो
पर सुलतान मे होता है सलमान खान बॉक्सींग करता है

ऐसी है फिल्मे जो मैंने देखी है

गाजी अटॅक मे थी भारत पाकिस्तान की लढाई
पर उस फिल्म मे, पाकिस्तान मारता ज्यादा बढाई

ऐसी है फिल्मे जो मैंने देखी है

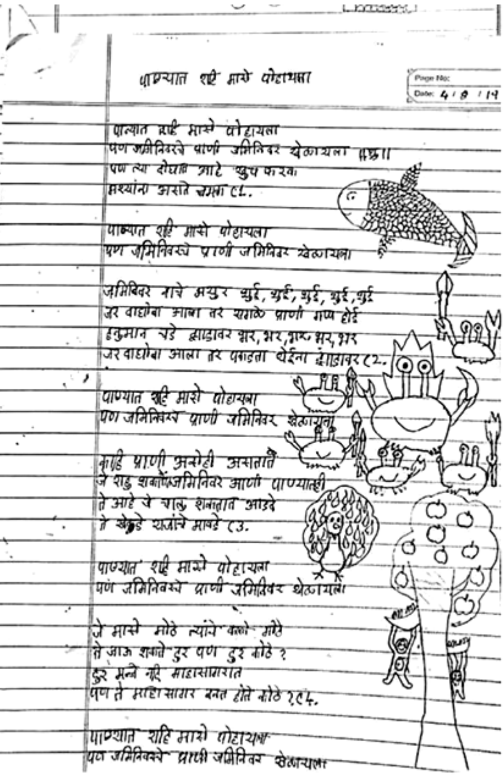
वॉली मे थे दो रोबोट
एक था नया जिसका नाम था ईवी
एक था पुराना जिसका नाम था वॉली

ऐसी है फिल्मे जो मैंने देखी है

दारजन द वंडर कार मे एक थी जादुई कार
जो चलती थी दिनरात अपने दुश्मनो को मारने बार-बार

ऐसी है फिल्मे जो मैंने देखी है.

नाम- आरव राऊत
कक्षा- 4
स्कूल- श्री राम प्रायमिक श
अमरावती महाराष्ट्र



पाण्यात राही मासे पोहायला

Page No:
Date: 4/8/19

पाण्यात राही मासे पोहायला
पण जमीनिवरचे प्राणी जमिनिवर खेळायला
पण त्या दोघात आहे खुप फरक
मत्स्यांना असते जमत C1.

पाण्यात राही मासे पोहायला
पण जमिनिवरचे प्राणी जमिनिवर खेळायला

जमिनिवर नाचे मयुर थुई, थुई, थुई, थुई, थुई
जर वाघोबा आला तर सगळे प्राणी गप्प होई
हनुमान चढे झाडावर भर, भर, भर, भर, भर
जर वाघोबा आला तर पकडता येईना झाडावर C2.

पाण्यात राही मासे पोहायला
पण जमिनिवरचे प्राणी जमिनिवर खेळायला

काही प्राणी असेही असतात
जे राहु शकतो जमिनिवर आणि पाण्यातही
ते आहे जे चालु शकतात आडवे
ते खेकडे राजांचे मावडे C3.

पाण्यात राही मासे पोहायला
पण जमिनिवरचे प्राणी जमिनिवर खेळायला

जे मासे मोठे त्यांचे काय मोठे
ते जाऊ शकते दुर पण दुर कोठे ?
दुर म्हणजे नदी महासागरात
पण ते महासागर बनत होते कोठे ? C4.

पाण्यात राहि मासे पोहायला
पण जमिनिवरचे प्राणी जमिनिवर खेळायला

आठवतात मला ते पावसाचे दिवस, पाण्यात राही मासे पोहायला, आणि झाड़ (कविता), मला लाभलेले विविध शिक्षक।"

जैसे-जैसे उसके पढ़ने का दायरा बढ़ा वैसे-वैसे लिखने में भी सृजनात्मकता आती गई।

इसमें स्कूल के शिक्षकों का भी प्रोत्साहन मिला। अब आरव कक्षा 5 में पढ़ता है। हाल ही में उसने कोरोना तालाबन्दी के अनुभवों पर लिखा।

मेरे उपरोक्त अनुभवों को पढ़कर कुछ अभिभावकों और शिक्षकों के मन में यह सवाल उठ सकता है कि क्या इतना सब करना मुमकिन है, ख़ासतौर पर प्राथमिक स्कूलों के बच्चों के साथ जहाँ आमतौर पर पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त पठन सामग्री मुश्किल ही उपलब्ध होती है और पाठ्यक्रम को पूरा करने का दबाव भी निरन्तर बना रहता है? मैं अपने अनुभवों से कह सकता हूँ कि इस प्रकार के प्रयास करना सम्भव तो है, लेकिन इन्हें इसी प्रकार उपयोग में लाना बिलकुल ज़रूरी नहीं है। आप सभी अपने-अपने सन्दर्भों में उपलब्ध संसाधनों के मुताबिक़ भी अलग-अलग प्रकार की गतिविधियाँ कल्पित कर सकते हैं जो आपके बच्चों और विद्यार्थियों को भाषा सीखने में मदद करती हों। इस दृष्टि से देखने पर शायद बच्चों में भाषा के विकास, उनकी भाषा सीखने की प्रक्रिया और शिक्षण विधियों के प्रति हमारे नज़रिए और समझ को हमें पलटकर देखने की ज़रूरत अधिक महत्त्वपूर्ण है। यदि हम बच्चे के पढ़ने और लिखने में सहायक वातावरण निर्माण के प्रति सजग बनते हैं, भाषा शिक्षण में अर्थनिर्माण, पढ़ने-लिखने का चस्का विकसित करने और सृजनशीलता को महत्त्वपूर्ण मानते हैं तो शायद हम अपने-अपने सन्दर्भों और संसाधनों की उपलब्धता के अनुसार समुचित शिक्षण प्रक्रियाओं को सोच पाएँगे। इससे

भी महत्त्वपूर्ण बात यह है कि हमारे देश में सभी बच्चों की मूलभूत शिक्षा में सुधार के लिए 'निपुण भारत' जैसे मिशन की परिकल्पना भी शिक्षकों, अभिभावकों, समुदाय, स्थानीय निकायों आदि की सक्रिय भूमिका के बिना नहीं की जा सकती है। इसलिए अभिभावकों और माता-पिता को भी बच्चों के सीखने-सिखाने से सम्बन्धित बातों के लिहाज़ से शिक्षित किया जाना चाहिए, ताकि हर बच्चा मूलभूत भाषा शिक्षण में निपुण हो सके।

सन्दर्भ

1. कृष्ण कुमार (1986), *बच्चे की भाषा एवं अध्यापक*, एनबीटी, नई दिल्ली
2. रुडाइन सिम्स बिशप (1990), *विन्डोज़, मिरर्स एंड स्लाइडिंग ग्लास डोर्स,* https://rb.gy/9hf4r
3. निमकर, मंजिरी (2009), *मुलांचे सृजनात्मक लिखाण*, ज्योत्स्ना प्रकाशन, पुणे
4. मुकुन्दा, कमला वी (2009), *स्कूल में आज तुमने क्या पूछा?*, एकलव्य प्रकाशन
5. बधेका, गिजुभाई (2006), *रंग बिरंगी मुर्गी,* गिजुभाई का गुलदस्ता-1, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत

गजेन्द्र राउत शिक्षा के क्षेत्र में पिछले 15 सालों से कार्यरत हैं। अभी लैंग्वेज एंड लर्निंग फ़ाउण्डेशन (नई दिल्ली) सेंट्रल अकादमिक टीम में प्रबन्धक (अकादमिक) के रूप में कार्य कर रहे हैं। इससे पहले दिगंतर, रूम टू रीड, टाटा ट्रस्ट्स जैसी प्रतिष्ठित संस्थाओं में काम किया है। लंदन यूनिवर्सिटी के इंस्टीट्यूट ऑफ़ एजुकेशन से एमए (कैरिकुलम, पेडागॉजी एंड असेसमेंट) किया है। वे फ़ोर्ड फ़ाउण्डेशन फ़ेलो हैं।

सम्पर्क : gsraut123@gmail.com